टिप्पणियाँ

6

लोक व जनजातीय कला का महत्व और उपयोगिता

प्रिय शिक्षार्थी! पिछले पाठ में हमने लोककला के क्षेत्र में प्रयुक्त प्रतीकों और रूपांकनों के बारे में सीखा। इस पाठ में हम लोक और जनजातीय कला के महत्व और प्रासंगिकता के बारे में जानेंगे। 'लोक' शब्द आम आदमी के जीवन से जुड़ा है। लोग 'प्रकृति' को एक जीवित शक्ति के रूप में पूजते हैं जो उनके अस्तित्व को नियंत्रित करती है। इस प्रकार विभिन्न मिथक और दंतकथाएँ प्राकृतिक शक्तियों के देवी-देवताओं से संबंधित हैं। जब लोग सूखे से पीड़ित हुए तो उन्होंने प्रार्थना की और बारिश के देवता 'वरुण' की पूजा की। इसी तरह, 'अग्नि'- अग्नि के देवता, 'पवन'- वायु के देवता, 'वसुंधरा'- पृथ्वी की देवी की भी कल्पना और पूजा की जाती थी। यहाँ तक कि पेड़, विशेष रूप से 'बरगद' के पेड़ और 'नारियल' के पेड़, कुछ आदिवासी समूहों; जैसे- 'संथाल', 'लोढ़ा' आदि में पूजे जाते है। जब जीवन में शांति और समृद्धि आई तो वे कला संबंधी गतिविधियों के लिए समय दे सकें।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आप :

- लोक और जनजातीय कला की चार विभिन्न श्रेणियों को पहचान कर सकेंगे, जिन्हें उनके महत्व के अनुसार विभाजित किया गया है;
- लोक और जनजातीय कला के माध्यम से पूजे जाने वाले विभिन्न देवी-देवताओं को पहचान कर सकेंगे;
- लोक और जनजातीय कला से जुड़े राज्यों के नाम बता सकेंगे;
- इन कलाओं में प्रयुक्त सामग्री और रंगों में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे;
- विभिन्न लोक और आदिवासी कलाओं को उनके महत्व और समकालीन मूल्यों के अनुसार वर्णित कर सकेंगे।

पहले ये कलारूप आम तौर पर घरों के अंदर बनाए जाते थे, इसलिए इस कला को आगे बढ़ाना महिलाओं की जिम्मेदारी बन गई, जिसने जल्द ही पारंपरिक कला का रूप धारण कर लिया। इन महिलाओं ने त्योहारों, धार्मिक कार्यों, विवाह और अन्य अनुष्ठानों के अवसर पर कला का निर्माण करना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे यह संचार का माध्यम बन गया। बाद में यह कला सजावटी रूप में बदल गई।

लोक और जनजातीय कलाओं को उनके महत्व के अनुसार चार श्रेणियों में बाँटा गया है :

1. दैवीय शक्तियों का सम्मान करने के एक उपकरण के रूप में
2. संचार के एक उपकरण के रूप में
3. जीवन की शांति और समृद्धि के लिए एक उपकरण के रूप में
4. सजावट के उपकरण के रूप में

6.1 लोक और जनजातीय कला : दैवीय शक्तियों का सम्मान करने का एक उपकरण

अब आप सौरा कला के बारे में जानेंगे।

शीर्षक : सौरा कला

राज्य : उड़ीसा

प्रकार : जनजातीय कला

अवधि : समकालीन

कलाकार : अज्ञात

संक्षिप्त परिचय

सौरा कला शायद भारत की सबसे दिलचस्प और आकर्षक आदिवासी कला परंपरा है। दुनिया भर में कई आदिवासी संस्कृतियों की तरह सौरा की कला आध्यात्मिक और धार्मिक मान्यताओं से प्रेरणा और दिशा लेती है। यह केवल एक कला का रूप नहीं है, बल्कि इसका बड़ा उपयोगी मूल्य है। यह पूजा के साधन और आह्वान के माध्यम के रूप में कार्य करती है। सौरा जनजाति भले ही आदिम है, पर यह ओडिशा की सबसे सक्रिय और जनजातियों में से एक है। इस जनजाति का मानना है कि उनकी दुनिया देवताओं, भूतों और प्रकृति की आत्माओं और उनके पूर्वजों से प्रभावित है। इन अदृश्य प्राणियों को जीवन के विभिन्न पहलुओं का नियंत्रण करने वाली शक्तियों के रूप में माना जाता है, वे ये भी मानते हैं कि प्रत्येक शक्ति का अपना प्रभाव क्षेत्र होता है।

सामान्य विवरण

इस कलाकृति (6.1) में, हम एक घर के रूप में सौर कला के सामान्य स्वरूप को जानेंगे, जैसेकि एक आयताकार या चौकोर आकार में 'कोठी' (अनाज) जो कि भरी होती है। यह मानव और

पशु आकृतियों की रचनाओं से भरा हुआ है, जिसे 'इत्तलम' कहा जाता है। प्रारंभिक रेखांकन के बाद कलाकार इसे पुजारियों को सुझाव के लिए भेजता है। फिर सुझाव के अनुसार- आवश्यक वस्तुओं को जोड़ता है। इस प्रकार चित्रकला में चेतन और निर्जीव वस्तुएँ, स्वदेशी पौधे, जानवर, उपकरण आदि शामिल होते हैं। हालांकि कुछ रोज़मर्रा की चीजें; जैसे- ट्रेन, कार और हवाई जहाज भी बाहरी दुनिया के संपर्क में आने के कारण बनाए जाते हैं।

चित्र 6.1: सौरा लोककला

यह चित्रकला शैली क्षेत्रगत आधार पर भिन्न होती है, लेकिन कुछ सामान्य समानताएँ भी हैं। सौरा चिह्न का प्रमुख वर्णक सफ़ेद है, जो चावल, राख, चाक या पानी के साथ मिश्रित चूने से प्राप्त होता है। ये पेंटिंग, जो मोटिफ़ के रूप में कार्य करती हैं, कलाकारों के धार्मिक विश्वास संबंधी विचारों का नाटकीयता रूप में प्रतिनिधित्व करती हैं। 'इत्तलम' या पेंटिंग केवल आध्यात्मिकता के लिए बनाई गई है, इसलिए चित्रकार इसमें अन्य कोई विशेष प्रभाव नहीं डालता।

पाठगत प्रश्न 6.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पा चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. सौरा किस प्रकार की कला है-
   (i) जनजातीय कला (ii) आधुनिक कला
   (iii) अमूर्त कला (iv) इनमें से कोई नहीं
2. सौरा लोग किस राज्य से संबंधित हैं-
   (i) पश्चिम बंगाल (ii) मध्य प्रदेश
   (iii) ओडिशा (iv) आंध्र प्रदेश

6.2 लोक और जनजातीय कला: संचार के एक उपकरण के रूप में

शिक्षार्थियों, आपने लोककला को परमात्मा के एक उपकरण के रूप में जाना है। अब आप लोककला को संचार साधन के रूप में जानेंगे।

शीर्षक : फड़ पेंटिंग
राज्य : राजस्थान
प्रकार : लोककला
समय : उन्नीसवीं सदी का आरंभ
कलाकार : अज्ञात

संक्षिप्त परिचय

आप जानते हैं कि लोक और जनजातीय कला संचार और मनोरंजन का माध्यम है। जब सिनेमा, रेडियो और टेलीविजन नहीं थे तो लोगों के जीवन में मनोरंजन का एकमात्र स्रोत 'अड्डा' (समूह में इकट्ठे होकर गपशप करना) और 'पुराणों' और लोक कथाओं का वर्णन करना था। यह कहा जा सकता है कि सिनेमा के सबसे पुराने रूपों में स्क्रॉल या फड़ पेंटिंग है। फड़ या लंबे चित्र स्क्रॉल फड़ चित्रकारों द्वारा निर्मित किए गए हैं, जिनमें से एक का वर्णन 'जोशियों' द्वारा विस्तार से किया गया है। गायक हमेशा एक युगल होते हैं जिन्हें 'भोपा' (पुरुष पुजारी) और 'भोपी' (महिला पुजारी) के रूप में जाना जाता है। पुरुष एक तार वाला वाद्ययंत्र बजाता है, जबकि महिला गायन में उसका साथ देती है। कथा के दौरान 'भोपा' या 'भोपी' द्वारा आयोजित अनुष्ठान में तेल का दीपक जलाया जाता है जो एक उल्लेखनीय विशेषता है।

सामान्य विवरण

फड़ चित्रकार अपने चित्रों का निर्माण घूम-घूमकर कथा सुनानेवालों के लिए करते हैं, जो गाँव के लोगों के लिए रात भर मनोरंजन प्रदान करते हैं। क्लासिक रचनाएँ; जैसे- 'देवनारायण की फड़' और 'पबूजी की फड़' जैसे प्रसिद्ध महाकाव्यों की कहानियों को इनमें वर्णित किया जाता

है। चित्रित विषय स्थानीय किंवदंतियों, विशेष रूप से 'पबूजी' और 'देवनारायण' (देवीजी), स्थानीय देवताओं की वीर कहानियों के आसपास के बनाए गए हैं। मनोरंजन प्रदान करने के लिए 'रामायण' और भगवान कृष्ण के जीवन की अनेक कहानियों को भी फड़ पर चित्रित किया गया है। गणेश की छवि भी बहुत लोकप्रिय है।

चित्र 6.2: फड़ पेंटिंग

फड़ को क्षैतिज रूप से चित्रित किया जा सकता है। प्रत्येक पैनल को एक कल्पनाशील ज्यामितीय डिज़ाइन द्वारा दूसरे से अलग किया जाता है। वर्तमान समय में अनेक छोटे-छोटे फलकों को भी एक ही शैली में चित्रित किया जाता है, जिसमें एक या दो आकृतियाँ और उनकी कहानियाँ संलग्न हैं। हाथियों और घोड़ों जैसे जानवरों का चित्रण और साँप, पक्षी, पेड़ और फूल जैसे पूरक आकर भी शामिल किए गए हैं। रंग बहुत सीमित हैं और इसमें केवल कुछ मूल रंग; जैसे- लाल, सफ़ेद, काला, नारंगी आदि शामिल हैं। यह कलाकृति केंद्र में गणेश को दो परिचारकों के साथ दिखाती है। उपयोग किए गए रंग आकर्षक और सजावटी हैं।

पाठगत प्रश्न 6.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पा चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. युगल गायकों को किस नाम से जाना जाता है-

   (i) भोपा और भोपी (ii) देव और देवी

   (iii) पुरुष और महिला (iv) अभिनेता और अभिनेत्री

2. कौन-सा शास्त्रीय साहित्य फड़ चित्रों से संबंधित है-

   (i) बापूजी की फड़ (ii) फड़ पेंटिंग

   (iii) पाबूजी की फड़ (iv) भगवानजी का फड़ो

6.3 लोक और जनजातीय कला जीवन में शांति और समृद्धि के लिए

प्रिय शिक्षार्थी! अब हम वार्ली चित्रकला के बारे में जानेंगे।

शीर्षक : वार्ली पेंटिंग

राज्य : महाराष्ट्र

प्रकार : जनजातीय कला

कलाकार : अज्ञात

संग्रह : अज्ञात

संक्षिप्त परिचय

भारत में धार्मिक जीवन में महिलाओं की भूमिका दूसरों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है। पूरे देश में विवाह, उपवास आदि जैसे अधिकांश घरेलू समारोहों में ये धार्मिक रस्में महत्वपूर्ण हैं। इन अनुष्ठानों के लिए महिलाएँ बचपन से ही पारंपरिक प्रशिक्षण प्राप्त करने लगती है। महाराष्ट्र में वार्ली पेंटिंग एक तरह की सामुदायिक रचनात्मक पेंटिंग है।

चित्र 6.3: वार्ली पेंटिंग

सामान्य विवरण

यह पेंटिंग महाराष्ट्र के ठाणे जिले की वार्ली जनजाति से जुड़ी है। यह भी पूरी तरह से गाँव की झोपड़ियों की भीतरी दीवारों पर बनाई गई है। इस चित्रकारी में अनुष्ठान चित्रकारी की एक लंबे समय से चली आ रही परंपरा है, जो मुख्य रूप से दो तीन 'सवासिनी' (एक महिला जिसका पति जीवित है) महिलाओं द्वारा विवाह के अवसर पर किया जाता है।

आकृतियों को एक गहरे रंग की पृष्ठभूमि पर बहुत महीन और हल्के रंग से चित्रित किया गया है जिसके परिणामस्वरूप एक झिलमिलाता प्रभाव दिखाई देता है। संकल्पनात्मक रूप से, आकृतियों को सीधी रेखाओं के प्राथमिक ज्यामितीय रूपों के सपाट आकार दिए गए हैं। वृक्ष समृद्धि का प्रतीक है जो जमीन के नीचे गहरा है। महिलाओं को औपचारिक गतिविधियों में व्यस्त दिखाया गया है। प्रत्येक के पास दीयों और अन्य प्रसाद के साथ एक थाली है। मोर के एक जोड़े को पेड़ की शाखा पर आनंद लेते हुए दिखाया गया है और सफ़ेद सूर्यदेव और चंद्रमा भगवान खुशी-खुशी सब कुछ देख लेते हैं। आम तौर पर तीन दिनों में शादी के दौरान, देवी की एक छवि को भी ढक कर रखा जाता है और बाद में दूल्हा और दुल्हन को दिखाया जाता है। इस अवसर को ताड़ी पीकर बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

पाठगत प्रश्न 6.3

1. वार्ली किस प्रकार की कला है?
2. वार्ली चित्रकला किस राज्य से संबंधित है?
3. इसे स्थानीय रूप से महाराष्ट्र में क्या कहा जाता है?
4. इस पेंटिंग के प्रमुख चित्रकार कौन हैं?

क्रियाकलाप

अपने क्षेत्र के विभिन्न त्योहारों में उपयोग की जाने वाली विभिन्न प्रकार की वार्ली कला के फोटो एकत्र कीजिए। अब ए-4 साइज की शीट लें और इन तस्वीरों को पेस्ट करें। इन चित्रों के विभिन्न रूपों के बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखिए।

6.4 लोक और जनजातीय कला : सजावटी उपकरण के रूप में

आइए अब हम सजावटी उपकरण के रूप में उपयोग की जाने वाली लोककला के बारे में जानें।

शीर्षक : कांथा

राज्य : पश्चिम बंगाल

प्रकार : लोककला

अवधि : समकालीन

कलाकार : अज्ञात

संक्षिप्त परिचय

कांथा कारीगरी, भारतीय लोककला का एक अंग है। यह सूती कपड़े पर की जाती है। कांथा विशेष रूप से बंगाली महिलाओं द्वारा अपने घरों में कपड़ों पर सजावट के लिए रंग-बिरंगे धागों का प्रयोग करते हुए बनाया गया था। आजकल कलाकार नए कपड़ों का प्रयोग करने लगे हैं। कांथा की कला ग्रामीण महिलाओं के अद्‌भुत धैर्य, शिल्प-कौशल और साधन-संपन्नता का चित्रण करती है। वहाँ की रचना में हम सूक्ष्म अवलोकन और लगाव की गहरी अनुभूति पाते हैं। साथ ही प्रकृति का सौंदर्य परिवर्तन, जीवन की संपूर्णता (सुंदरता का गहरा बोध) तथा विलासिता को दूर करने की विशेषता प्रकट होती है।

चित्र 6.4: कांथा कला

पश्चिम बंगाल में कांथा बनाने की परंपरा का प्रतिनिधित्व ग्रामीण महिलाओं द्वारा किया जाता है। बंगाली लोग, विशेषा रूप से ग्रामीण महिलाएँ अत्यधिक धार्मिक होते हैं और वे स्वभाविक

रूप से अपने देवी-देवताओं से प्रभावित हैं। हिंदू कांथा रचनाकार धार्मिक प्रतीक चिह्नों और अपने देवी-देवताओं पर आधारित चित्र बनाती हैं, जबकि मुस्लिम महिलाएँ भौगोलिक एवं फूल, पत्तियों से अलंकरण करती हैं। आरम्भिक काल में लगभग सभी समुदायों की महिलाएँ कांथा कारीगरी करती थी, किन्तु आजकल सीमित एवं विशिष्ट खंड के समुदाय ही इस कला में संलग्न हैं।

सामान्य विवरण

कांथा का उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जाता है, जैसे- रजाई या बिस्तर के कवर (सुजनी), रूमाल, किताबों के कवर आदि। इनके अलावा, उन्हें परिवार के सदस्यों के लिए उपहार के रूप में उपयोग किया जाता है।

आजकल कांथा मुख्य रूप से सजावटों के लिए सीमित हैं, मुख्यत: साड़ी डिज़ाइन के लिए। कांथा का हर विवरण देश की साधारण महिलाओं की कल्पनाशक्ति और रचनात्मक कौशल को दर्शाता है। प्राय: कला के प्रति यह समर्पण ऐसा है जिसके बारे में लोग जान नहीं पाते, क्योंकि वे कांथा को अपना नाम नहीं देती, भले ही कुछ महिलाएँ अपने कंथा के काम को अपना नाम दे रही हों। कांथा स्टिच वाली साड़ियां अब चलन में हैं। यह रेशमी साड़ी कलाकार की उत्कृष्ट शिल्प-कौशल को दर्शाती है। इस डिज़ाइन में विभिन्न प्रकार के रूपांकनों का उपयोग किया जाता है। इसमें पुष्प, पशु, पक्षी और ज्यामितीय रूपांकनों को पूर्ण सामंजस्य और संतुलन में प्रस्तुत किया गया है। सभी प्रकार के रंग के धागों का प्रयोग किया जाता है, ज्यादातर चमकीले रंगों का इस्तेमाल किया जाता है।

पाठगत प्रश्न 6.4

1. कांथा किस प्रकार की कला है?
2. इसका संबंध किस राज्य से है?
3. 'कांथा' शब्द का क्या अर्थ है?
4. 'कांथा' में सामान्यत: प्रयुक्त होने वाली सामग्री कौन-सी है?

क्रियाकलाप

कांथा सिले हुए ड्रेस मटेरियल तो आपने देखा ही होगा। अपनी ड्राइंग शीट पर एक सुंदर पारंपरिक कांथा डिज़ाइन बनाइए साथ ही डिज़ाइन को मोटिफ्स से सजाइए।

आपने क्या सीखा

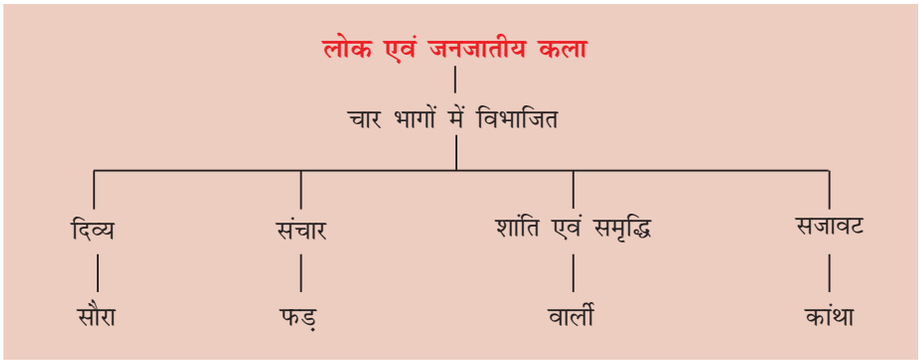

सीखने के प्रतिफल

शिक्षार्थी

- विभिन्न कलाकृति बनाने के लिए सौरा लोककला का उपयोग करते हैं।
- वस्तुओं को डिज़ाइन करने के लिए वार्ली कला-शैली का उपयोग करते हैं।

पठांत प्रश्न

1. लोक और जनजातीय कला को किन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है? प्रत्येक श्रेणी का एक उदाहरण भी दीजिए।
2. सौरा कला क्या है? सौरा कला का क्या महत्व है?
3. फड़ पेंटिंग क्या है? संचार के माध्यम के रूप में इसका उपयोग कैसे किया जाता है?
4. वार्ली पेंटिंग क्या है? महाराष्ट्र के वारली आदिवासी समुदाय में शांति और समृद्धि के प्रतीक के रूप में इसका उपयोग कैसे किया जाता है?
5. बंगाल में कांथा किस प्रकार कुटीर उद्योग बन गई है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

6.1

1. (i) जनजातीय कला
2. (iii) ओडिशा

6.2

1. (i) भोपा और भोपी
2. (iii) पबूजी की फड़

6.3

1. जनजातीय कला
2. महाराष्ट्र।
3. समृद्धि का वृक्ष
4. अज्ञात

6.4

1. लोककला
2. पश्चिम बंगाल
3. सिलाई का काम कढ़ाई
4. सूती कपड़ा